

## ग्रामीण महिला सशक्तिकरण में कल्याणकारी योजनाओं का प्रभाव

Vishal<sup>1</sup>, Dr. Chittibabu Putcha<sup>2</sup> & \*Dr. Yogesh Kumar Pal<sup>3</sup>

<sup>1</sup>Research Scholar, Department of lifelong education, Dr. Harisingh Gour ishwavidyalaya  
Sagar (M.P.), India. Email: [vishalanna7@gmail.com](mailto:vishalanna7@gmail.com)

<sup>2</sup>Assistant Professor, Department of lifelong education, Dr. Harisingh Gour Vishwavidyalaya  
Sagar (M.P.), India. Email: [cbputcha@dhsgsu.com](mailto:cbputcha@dhsgsu.com)

<sup>3</sup>Assistant Professor, Department of lifelong education, Dr. Harisingh Gour ishwavidyalaya  
Sagar (M.P.), India. Email: [yogesh210502@gmail.com](mailto:yogesh210502@gmail.com)

DOI: [doi.org/10.5281/zenodo.18207615](https://doi.org/10.5281/zenodo.18207615)

Accepted on: 31/12/2025

Published on: 10/01/2026

### सारांश:

यह शोध पत्र भारत में महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता का विश्लेषण करता है और इसके उपायों एवं योजनाओं पर प्रकाश डालता है। सशक्तिकरण सामाजिक विकास की मुख्य प्रक्रिया है, जो महिलाओं को ग्रामीण क्षेत्रों के आर्थिक, राजनीतिक एवं सामाजिक विकास में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित करता है। वर्तमान में, महिलाओं का सशक्तिकरण 21वीं सदी की प्रमुख चुनौतियों में से एक बन चुका है, तथापि व्यावहारिक स्तर पर यह अभी भी एक आदर्श ही प्रतीत होता है। महिलाओं का सशक्तिकरण आवश्यक रूप से समाज में परंपरागत रूप से वंचित महिलाओं की आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक स्थिति के उन्नयन की प्रक्रिया है। हम अपने दैनिक जीवन में देख सकते हैं कि महिलाएं किस प्रकार विभिन्न सामाजिक बुराइयों का शिकार बनती हैं। महिला सशक्तिकरण संसाधनों का विस्तार कर महिलाओं की क्षमताओं का विकास करने और उन्हें राजनीतिक जीवन विकल्प अपनाने का अवसर प्रदान करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। यह उन्हें सभी प्रकार की हिंसा से सुरक्षित रखने की प्रक्रिया भी है। यह अध्ययन मुख्य रूप से द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। भारत की महिलाएं अपेक्षाकृत कमजोर स्थिति में हैं, और सरकार द्वारा किए गए अनेक प्रयासों के बावजूद, वे पुरुषों की तुलना में कम स्थिति का अनुभव करती हैं। यह पाया गया है कि समाज में अभी भी लैंगिक असमानता के मानदंडों को स्वीकार किया जाता है। अध्ययन का निष्कर्ष बुनियादी सुविधाओं का प्रावधान और विभिन्न योजनाओं का कार्यान्वयन महिला सशक्तिकरण के लिए अनिवार्य कारक हैं।

**मुख्य शब्द-** महिला सशक्तिकरण, बुनियादी अधिकार, शिक्षा- स्वास्थ्य, योजना कार्यान्वयन।

## परिचय:

आंकड़ों के अनुसार, यदि भले ही महिलाएं भारत की कुल आबादी का 48 प्रतिशत हिस्सा हैं, तो वे राष्ट्रीय श्रम शक्ति का केवल 29 प्रतिशत भाग ही बनाती हैं। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, ग्रामीण महिलाओं का कृषि और पशुपालन में योगदान कुल कार्यबल का लगभग 90 प्रतिशत है, जिसमें से 80 प्रतिशत महिलाएं असंगठित क्षेत्रों में कार्यरत हैं। इसके बावजूद, यह पाया गया है कि ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की कुल आबादी का लगभग 68 प्रतिशत का उपयोग नहीं किया जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थिति अत्यंत दयनीय है। जनगणना के आंकड़ों से पता चलता है कि ग्रामीण भारतीय महिलाओं की साक्षरता दर केवल 58.75 प्रतिशत है, जबकि पुरुषों की तुलना में यह प्रतिशत 78.57 है। केवल 26 प्रतिशत महिलाओं को औपचारिक ऋण प्राप्त करने का अवसर मिल पाता है, और लिंगानुपात भी निंदनीय स्तर पर है। सभी क्षेत्रों में महिलाओं को आर्थिक जीवन में पूर्ण रूप से भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए उन्हें सशक्त बनाना आवश्यक है, क्योंकि इससे लचीली और स्थिर आर्थिक प्रणालियों का निर्माण होता है, जो जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाते हैं। हालांकि, महिलाओं का सशक्तिकरण एक बहुआयामी, बहु-आयामी और बहुस्तरीय अवधारणा है, जिसके लिए उन्हें भौतिक, मानवीय और बौद्धिक संसाधनों पर अधिकाधिक नियंत्रण प्राप्त करना आवश्यक है। इनमें वित्तीय संसाधनों जैसे धन का भी समावेश है, जिनके माध्यम से महिलाओं को वित्तीय पहुंच प्रदान की जाती है और उन्हें घर, समुदाय, समाज एवं राष्ट्र स्तर पर निर्णय लेने की प्रक्रिया में भागीदारी का अधिकार मिलता है, जिससे उन्हें सशक्त बनाने में मदद मिलती है। महिलाओं को बहुआयामी बनाने के प्रयास से उन्हें अपनी क्षमता के आधार पर विकास प्रक्रियाओं में भाग लेने, योगदान करने और लाभ प्राप्त करने के अवसर बढ़ेंगे, जिससे उनके योगदान का सम्मान किया जा सके, गरिमा का संरक्षण हो, और विकास के लाभ समान रूप से वितरित किए जा सकें। इससे महिलाओं के आर्थिक संसाधनों पर नियंत्रण में सुधार होगा और उनकी आर्थिक सुरक्षा मजबूत होगी। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं का सशक्तिकरण अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि इससे उन्हें सामाजिक हिंसा और उत्पीड़न से मुक्ति पाने में सहायता मिलेगी। इस शोध पत्र में अनेक सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं, जो उनके परिवेश और समाज में जागरूकता का प्रसार कर महिलाओं को जीवन यापन के विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित करेंगे।

## अध्ययन का उद्देश्य-

1. महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता का विश्लेषण करना।
2. महिला सशक्तिकरण से संबंधित सरकारी योजनाओं का अध्ययन करना।
3. महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण को प्रभावित करने वाले कारकों का विश्लेषण करना।

### **अनुसंधान विधि-**

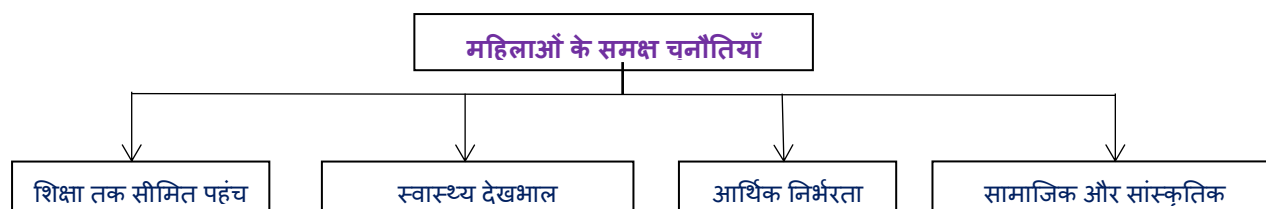
यह शोध पत्र मुख्यतः वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। इसमें भारत में महिलाओं के सशक्तिकरण का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। प्रयोग में लाए गए आंकड़े इस अध्ययन की आवश्यकतानुसार पूर्णतः द्वितीयक स्रोतों से संकलित किए गए हैं।

### **ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में महिलायें-**

भारत में महिलाओं की वर्तमान स्थिति, उनके पुरुष समकक्षों के समान स्तर पर पहुंचना अभी भी भारतीय महिलाओं के लिए एक दूर का सपना है। न केवल वे सामाजिक और आर्थिक हाशिए पर हैं, बल्कि सार्वजनिक जीवन में भी उनकी भागीदारी सीमित है, क्योंकि सामान्य भारतीय महिलाएं घर या बाहर निर्णय लेने की प्रक्रिया में बहुत कम भागीदारी कर पाती हैं। 2011 की पिछली जनगणना के अनुसार, भारत का लिंगानुपात 940 है, और महिलाओं की साक्षरता दर 65.46 प्रतिशत है, जो पुरुषों की तुलना में बहुत कम है। भारत में साक्षरता दर और लिंगानुपात दोनों ही मामलों में महिलाओं का प्रदर्शन पुरुषों की तुलना में पिछड़ा हुआ है, जिससे ये दोनों ही मुद्दे निरंतर चिंता का विषय बने हुए हैं। भारत के खंडित इतिहास ने समाज में महिलाओं के प्रति दृष्टिकोण में कई उतार-चढ़ाव देखे हैं। ऋग्वेदिक काल से जब महिलाओं को समान दर्जा प्राप्त था, गुप्त काल तक जब उनकी स्थिति खराब हो गई, पुरुषों का वर्चस्व जड़ जमा चुका था। मुगल काल में बाल विवाह, दहेज और सती जैसी प्रथाएँ सामने आने से उनकी परेशानियाँ और बढ़ गईं। ब्रिटिश शासन के दौरान, कई सुधारकों ने महिलाओं के समान अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी। महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू महिला अधिकारों के पैरोकार थे और उनके प्रयासों के परिणामस्वरूप, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन में महिलाओं की स्थिति कुछ हद तक ऊपर उठने लगी। यह बदलाव धीमा रहा है और अब भी महिलाओं को "कमजोर लिंग" के रूप में देखा जाता है।

### **ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के समक्ष चुनौतियाँ-**

ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के सामने कई तरह की चुनौतियाँ रहती है जिनका उनके सशक्तिकरण पर काफी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। जो निम्नानुसार है-



- शिक्षा तक सीमित पहुंच- सामाजिक-आर्थिक बाधाओं, लैंगिक भेदभाव और अपर्याप्त स्कूली शिक्षा सुविधाओं के कारण कई ग्रामीण लड़कियों के लिए शिक्षा एक दूर का सपना बनी हुई है। परिवार अक्सर लड़कियों की तुलना में लड़कों की शिक्षा को प्राथमिकता देते हैं, जिसके कारण युवा लड़कियों में स्कूल छोड़ने की दर बहुत अधिक होती है।
- स्वास्थ्य देखभाल असमानताएँ- ग्रामीण महिलाओं को अक्सर बुनियादी स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच की कमी होती है, जिसमें मातृ एवं प्रजनन स्वास्थ्य सेवाएं शामिल हैं। खराब बुनियादी ढांचा, चिकित्सा सुविधाओं तक लंबी यात्रा दूरी और स्वास्थ्य सेवा पेशेवरों की कमी इस समस्या को और बढ़ा देती है, जिसके परिणामस्वरूप मातृ एवं शिशु मृत्यु दर अधिक होती है।
- आर्थिक निर्भरता- कई ग्रामीण महिलाएँ बिना किसी आर्थिक स्वतंत्रता के अवैतनिक घरेलू काम या कृषि कार्य तक ही सीमित हैं। ऋण तक सीमित पहुँच, भूमि स्वामित्व प्रतिबंध और लैंगिक वेतन अंतर गरीबी से मुक्त होने की उनकी क्षमता में बाधा डालते हैं।
- सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाएँ- कई ग्रामीण समुदायों में गहरी जड़ें जमाए हुए पितृसत्तात्मक मानदंड महिलाओं के अधिकारों और आवाजों को दबाते रहते हैं। कम उम्र में शादी, घरेलू हिंसा और सीमित गतिशीलता जैसे मुद्दे उनकी प्रगति में और बाधा डालते हैं।

**भारत में महिला सशक्तिकरण से संबंधित संचालित योजनाएं –**

1. सुकन्या समृद्धि योजना (एसएसवाई)- सबसे लोकप्रिय "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ" मिशन के एक हिस्से के रूप में शुरू की गई SSY योजना में नवजात बालिका के माता-पिता द्वारा खाता खोला जा सकता है। इस मिशन का उद्देश्य

लड़कियों की शिक्षा सुनिश्चित करके लिंग अनुपात में सुधार करना है। यह योजना 15 वर्षों के लिए है। इसे एक बार में 5 वर्ष तक बढ़ाया जा सकता है।

2. लखपति दीदी योजना- यह भारत में महिला सशक्तिकरण की प्रमुख योजनाओं में से एक है। इस योजना के तहत सरकार का लक्ष्य स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) में काम करने वाली 2 करोड़ महिलाओं को सशक्त बनाना है ताकि वे 1 लाख रुपये से अधिक की पूंजी जुटा सकें।

3. ड्रोन दीदी योजना- भारत में ड्रोन दीदी महिला सशक्तिकरण योजना का लक्ष्य स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) के 15,000 कार्यकर्ताओं को ड्रोन पायलट बनने के लिए प्रशिक्षित करना है। ये प्रशिक्षित महिलाएं ड्रोन का उपयोग करके दवाइयां और किराने का सामान पहुंचाने जैसी विभिन्न आर्थिक गतिविधियां कर सकती हैं और अपनी आजीविका कमा सकती हैं।

4. मिशन इंद्रधनुष- मिशन इंद्रधनुष भारत में महिला सशक्तिकरण के लिए एक महत्वाकांक्षी सरकारी योजना है। इस योजना के तहत सरकार गर्भवती महिलाओं और बच्चों का पूर्ण टीकाकरण सुनिश्चित करती है।

5. मुद्रा योजना PMMY (प्रधानमंत्री मुद्रा योजना)- छोटे व्यवसाय मालिकों को 20 लाख रुपये तक का बिना किसी गारंटी के ऋण प्रदान करती है (बजट 24-25 में सीमा बढ़ाई गई है)। मुद्रा ऋणों के लिए आवंटित बजट में वृद्धि के साथ, महिलाओं के नेतृत्व वाले उद्यमों को अधिक ऋण प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

6. TREAD योजना- भारत में महिला सशक्तिकरण की कम चर्चित योजनाओं में से एक है व्यापार संबंधी उद्यमिता विकास सहायता योजना (TREAD)। इस योजना का उद्देश्य महिला उद्यमियों का विकास करना है। इसी कारण से सरकार महिला उद्यमियों की कुल ऋण पात्रता का 30% 30 लाख रुपये तक प्रदान करती है।

7. उज्ज्वला योजना- प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना (पीएमयूवाई) बीपीएल परिवारों को मुफ्त गैस कनेक्शन और सब्सिडी वाले गैस सिलेंडर प्रदान करती है। यह योजना महिलाओं को खाना पकाने के लिए स्वच्छ ईंधन प्रदान करके सीधे लाभ पहुंचाती है।

8. स्टैंडअप इंडिया मिशन स्टैंडअप- इंडिया मिशन का उद्देश्य अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और महिला उद्यमियों को 10 लाख से 1 करोड़ रुपये के बीच ऋण प्रदान करना है। यह ऋण कुल परियोजना लागत का 75% तक कवर करता है। यह सुनिश्चित करती है कि महिला उद्यमियों को आवश्यक निवेश मिले।

9. PMAY (प्रधानमंत्री आवास योजना)- भारत में महिला सशक्तिकरण योजनाओं की बात करते समय कई लोग PMAY योजना को नज़रअंदाज़ कर देते हैं। लेकिन, यह ध्यान देने योग्य है कि महिलाओं को स्वामित्व के साथ PMAY घरों का आवंटन उन्हें सशक्त बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम है।

10. महिला ई-हाट योजना- जैसा कि नाम से पता चलता है, यह महिलाओं के लिए अपने उत्पादों को प्रदर्शित करने के लिए एक ई-मार्केटप्लेस है। वे ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए उचित उत्पाद विवरण और तस्वीरें भी जोड़ सकती हैं। यह महिला सशक्तिकरण सुनिश्चित करते हुए मेक इन इंडिया को बढ़ावा देता है।

11. महिला शक्ति केंद्र- एमएसके महिलाओं को कौशल विकास, डिजिटल साक्षरता और रोजगार पाने के लिए सहायता प्रदान करते हैं। वे महिला सशक्तिकरण के केंद्र के रूप में कार्य करते हैं जो आधुनिक भारत की नींव रख सकते हैं। महिला सशक्तिकरण समय की मांग है।

### परिचर्चा-

महिला सशक्तिकरण एक सतत प्रक्रिया है और इसका कोई अंतिम बिंदु या परिणाम नहीं है जिसे मापा जा सके। अनुभवात्मक मार्ग जो स्पष्ट रूप से परिभाषित नहीं हैं, उनका भारत जैसे विविधतापूर्ण सेटअप में महिलाओं के लिए अलग-अलग परिणाम हो सकते हैं और उन्हें समग्र रूप से देखा जाना चाहिए। सामाजिक और सांस्कृतिक व्यवस्था में निहित बदलते रीति-रिवाजों को देखने के लिए धैर्यपूर्ण दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। दूसरी ओर, यदि हम उनके सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य की स्थिति में निरंतर सुधार के रूप में होने वाले सकारात्मक पहलुओं को देखते हैं, तो भारत में सतत ग्रामीण विकास की उपलब्धि जीवन के सभी पहलुओं में महिलाओं की भागीदारी के साथ सराहनीय लाभ दिखाएंगी। भारत में महिला सशक्तिकरण अब मुख्यधारा के विकास की चिंता बन गया है। विकसित देशों के विपरीत, यहाँ सवाल यह है कि विकास महिलाओं के लिए क्या कर सकता है और फिर महिलाएँ विकास के लिए क्या कर सकती हैं, के लाभों को प्राप्त किया जाए। महिला सशक्तिकरण उस लक्ष्य को प्राप्त करने का साधन है, जो देश के आर्थिक, सांस्कृतिक और सामाजिक विकास में समान और सहक्रियात्मक प्रगति के साथ निरंतर आगे बढ़ेगा।

ग्रामीण भारत में, समानता और समावेशिता जैसी कई महत्वपूर्ण विशेषताओं को कई दशकों से अनदेखा किया गया है। भले ही भारत में कुल आबादी में महिलाओं की संख्या लगभग आधी है, लेकिन उन्हें अक्सर स्थानीय भागीदारी और सार्वजनिक प्रतिनिधित्व से बाहर रखा जाता है भारतीय संविधान की प्रस्तावना में लैंगिक समानता के सिद्धांत का

प्रावधान है और महिलाओं की समानता को मौलिक अधिकार के रूप में प्रदान किया गया है। संविधान राज्य को अपने मौलिक कर्तव्य के रूप में इसे बढ़ावा देने और सुविचारित नीतियों और निर्देशों के माध्यम से एक निश्चित दिशा प्रदान करने के लिए बाध्य करता है। हालाँकि, आज़ादी के सत्तर साल से भी ज़्यादा समय बाद भी अभी एक लंबा सफ़र तय करना है। हर दिन मीडिया महिलाओं के खिलाफ़ अत्याचारों की कहानियों से भरा रहता है। ये मुद्दे उन क्षेत्रों और समुदायों में ज़्यादा केंद्रित हैं जो अभी भी पुरुष श्रेष्ठता की सदियों पुरानी अवधारणा को स्वीकार करते हैं। ग्रामीण भारत में सामाजिक और आर्थिक संरचना पिछले कुछ सालों में ज़्यादा नहीं बदली है। महिलाओं के हाशिए पर जाने में बेरोजगारी, जातिवाद और शिक्षा की कमी की बड़ी भूमिका है, खासकर ग्रामीण इलाकों में। लैंगिक असमानता, खास तौर पर ग्रामीण भारत में, लैंगिक भेदभाव की अभी भी व्याप्त समस्या की एक स्पष्ट और गंभीर याद दिलाती है। महिलाओं को अभी भी वित्तीय बहिष्कार और शिक्षा के अवसरों, चिकित्सा देखभाल, स्वच्छता सुविधाओं और अन्य चीज़ों की कमी से संबंधित समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। महिलाओं की समानता के मुद्दे को संबोधित करने और उनकी सामाजिक स्थिति को ऊपर उठाने के लिए, भारत सरकार ने विभिन्न क्षेत्रों में कानूनों, योजनाओं और कार्यक्रमों के माध्यम से एक ठोस प्रयास किया है, इस अहसास के साथ कि आगे का रास्ता कल्याण से विकास पर ध्यान केंद्रित करना है। इस प्रकार महिला सशक्तिकरण को महिलाओं की स्थिति को ऊपर उठाने में मुख्य मुद्दे के रूप में मान्यता मिली है।

### **ग्रामीण भारत में महिलाओं को सशक्त बनाए जाने के प्रमुख आयाम**

ग्रामीण भारत में महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो उनके सामने आने वाली विभिन्न चुनौतियों का समाधान करे। ग्रामीण भारत में महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए यहाँ सात कदम दिए गए हैं:-

- स्वयं सहायता समूहों का गठन- एक स्वयं सहायता समूह में आमतौर पर 18 से 40 वर्ष की आयु की 10 से 25 महिलाएं शामिल होती हैं। महिलाएं एक अनौपचारिक समूह बनाने के लिए एक साथ आती हैं, जहाँ वे सामूहिक शक्ति का एहसास कर सकती हैं और अपना खुद का उद्यम या व्यवसाय शुरू कर सकती हैं। ये व्यवसाय किसी भी स्वदेशी गतिविधियों या प्रतिभा को बढ़ावा दे सकते हैं जैसे कि पापड़, अचार जैसी खाद्य सामग्री बनाना या हस्तनिर्मित खिलौने, घरेलू सामान आदि जैसी चीज़ें बनाना।

- शिक्षा को बढ़ावा दें- यह समय की सबसे बड़ी जरूरत है। अच्छी शिक्षा तक पहुंच से ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के जीवन की गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार हो सकता है। ग्रामीण क्षेत्रों में स्कूलों की स्थापना और रखरखाव पर ध्यान केंद्रित करना, तथा यह सुनिश्चित करना कि वे लड़कियों के लिए सुलभ और स्वागत योग्य हों। नामांकन और उपस्थिति को प्रोत्साहित करने के लिए छात्रवृत्ति, निःशुल्क पाठ्यपुस्तकें और भोजन जैसे प्रोत्साहन प्रदान करें।
- व्यावसायिक प्रशिक्षण को बढ़ावा दें- ग्रामीण महिलाओं की जरूरतों के अनुरूप व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू करें। इन कार्यक्रमों में कृषि तकनीक, पशुपालन, हस्तशिल्प और लघु-स्तरीय उद्यमिता सहित कई तरह के कौशल शामिल हो सकते हैं। ग्रामीण समुदायों के भीतर या उनके निकट प्रशिक्षण केंद्र स्थापित करें तथा इन कार्यक्रमों को पूरा करने वाली महिलाओं के लिए रोजगार के अवसर सृजित करने हेतु स्थानीय उद्योगों के साथ सहयोग करें।
- स्वास्थ्य सेवा तक पहुंच- क्लीनिकों का निर्माण करके और स्थानीय स्वास्थ्य पेशेवरों को प्रशिक्षण देकर ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवा के बुनियादी ढांचे में सुधार करना। मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य, परिवार नियोजन और स्वच्छता पर ध्यान केंद्रित करते हुए स्वास्थ्य जागरूकता अभियान चलाएं। मोबाइल हेल्थकेयर इकाइयाँ दूरदराज के क्षेत्रों तक पहुंच सकती हैं, जिससे महिलाओं को चिकित्सा सेवाओं तक नियमित पहुंच सुनिश्चित हो सके।
- आर्थिक अवसरों को सुगम बनाना- उद्यमिता, विपणन और वित्तीय प्रबंधन पर प्रशिक्षण सत्र आयोजित करके स्थानीय बाजारों में महिलाओं की भागीदारी को प्रोत्साहित करना। संसाधनों को एकत्रित करने और ज्ञान को साझा करने के लिए महिला सहकारी समितियों की स्थापना करें। माइक्रोफाइनेंस कार्यक्रम जो महिलाओं को छोटे ऋण प्रदान करते हैं, जिससे उन्हें अपना व्यवसाय शुरू करने या उसका विस्तार करने में मदद मिलती है, भी बहुत मददगार हो सकते हैं।
- भूमि अधिकार- कई ग्रामीण क्षेत्रों में, महिलाओं को पितृसत्तात्मक मानदंडों के कारण अपने भूमि अधिकारों को लागू करने में अक्सर चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। वकालत के प्रयासों को कानूनी सुधारों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए जो महिलाओं के लिए समान भूमि स्वामित्व सुनिश्चित करते हैं। इसमें महिलाओं को भूमि के स्वामित्व और उत्तराधिकार का अधिकार सुनिश्चित करने वाले कानूनों को लागू करना और लागू करना शामिल है। इसके साथ ही, जागरूकता अभियान महिलाओं को उनके अधिकारों के बारे में शिक्षित कर सकते हैं तथा उन्हें अपने दावे करने के लिए सशक्त बना सकते हैं।



- प्रौद्योगिकी समावेशन- ग्रामीण क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी का उपयोग महिलाओं को सूचना, बाजार और शैक्षिक संसाधनों तक उनकी पहुंच बढ़ाकर महत्वपूर्ण रूप से सशक्त बना सकता है। पहलों में डिजिटल साक्षरता पर प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान करना, कृषि संबंधी जानकारी के लिए मोबाइल एप्लीकेशन शुरू करना, तथा ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफार्मों तक पहुंच को सुगम बनाना शामिल होना चाहिए। प्रौद्योगिकी वित्तीय समावेशन के लिए एक उपकरण के रूप में भी काम कर सकती है, जिससे महिलाओं को बैंकिंग सेवाओं और सरकारी योजनाओं तक अधिक आसानी से पहुंच मिल सकेगी।
- सामुदायिक जागरूकता कार्यक्रम- इन मानदंडों को चुनौती देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। स्थानीय नेताओं, प्रभावशाली व्यक्तियों और समुदाय के सदस्यों के साथ मिलकर लैंगिक समानता और विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी के महत्व को बढ़ावा देना। इन कार्यक्रमों में अधिक समावेशी और सहायक सामुदायिक वातावरण को बढ़ावा देने के लिए कार्यशालाएं, सेमिनार और मीडिया अभियान शामिल हो सकते हैं।

### निष्कर्ष-

महिला सशक्तिकरण एक स्थायी और प्रगतिशील समाज बनाने का एक शक्तिशाली साधन है। हमारे देश में महिलाओं को बहुत अधिक उत्पीड़न, मौखिक दुर्व्यवहार, मानसिक शोषण, बलात्कार, कार्यस्थल पर भेदभाव आदि का सामना करना पड़ता है। हालांकि, महिलाओं को विभिन्न प्रकार के सशक्तिकरण, जैसे सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, राजनीतिक और मनोवैज्ञानिक, के माध्यम से इन अन्यायों के खिलाफ खुद का बचाव करने में मदद करना संभव है। भारत सरकार महिलाओं की सहायता के लिए कई योजनाएँ विकसित कर रही है। उनमें से कुछ महिला उद्यम निधि योजना, मुद्रा योजना, अन्नपूर्णा योजना और देना शक्ति योजना हैं। एक राष्ट्र के रूप में, महिलाओं को सम्मानजनक और पूर्ण जीवन जीने की स्वतंत्रता और अवसर देना हमारी जिम्मेदारी है। भारत में महिला सशक्तिकरण योजनाओं का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि महिलाओं को संसाधनों, अवसरों और सुरक्षा तक समान पहुँच मिले। सरकार के साथ-साथ गैर सरकारी संगठनों द्वारा चलाए जा रहे कई अलग-अलग कार्यक्रम और पहल हैं जो इस लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में काम करते हैं। हालांकि अभी भी बहुत प्रगति की जानी है, भारत में महिला सशक्तिकरण के लिए सरकारी योजनाएँ 2021 में एक लंबा सफर तय कर चुकी हैं और हर साल लाखों महिलाओं के जीवन पर प्रभाव डालती रहती हैं।

महिलाओं के घर की पूंजी और जमीन में बराबरी की हिस्सेदारी सुनिश्चित कर चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1. शर्मा, राजेन्द्र कुमार (1996): *ग्रामीण समाजशास्त्र*. एटलांटिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स.
2. इन्द्र, एम. ए. (1995): *प्राचीन भारत में स्त्रियों की स्थिति*. मोतीलाल पब्लिशर्स.
3. लॉरेन्स, जास्मिन (2010). *महिला श्रमिक सामाजिक स्थिति एवं समस्याएं*. अर्जुन पब्लिशिंग हाउस.
4. यादव, रवि प्रकाश, दीप रागिनी, राय, पूजा (2010). *भारत में महिला श्रमिक*. एटलांटिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.) लि.
5. प्रसाद, गोविन्द (2007): *महिला एवं बाल श्रमिक (सामाजिक समस्याएं, समाधान एवं भावी दृष्टिकोण)*. डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस.
6. राष्ट्रीय समिति की रिपोर्ट का सार संक्षेप (1971-74) भारत में महिलाओं की स्थिति, अलाईड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, ज्योति प्रिंटिंग वर्क्स, जामा मस्जिद, दिल्ली
7. कपूर, प्रमिला (1973): *भारत में विवाह और कामकाजी महिलाएँ*, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली.